International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2023, Accepted: 02-09-2023, Published: 18-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 21-23

समकालीन हिंदी कविता : अभिव्यक्ति पर संकट की पहचान

प्रतिभा द्विवेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
समकालीन हिंदी कविता में विभिन्न क्रूर शक्तियों और निरंकुश प्रवृत्ति के मनुष्यों एवं मनुष्य.समूहों की पहचान दिखाई पड़ती है। कई कविताओं में इन ताकतों के विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर सुनाई पड़ता है। मनुष्य के संवेदनशील पक्षों पर नृशंसताओं के प्रभाव को पहचान कर हिंदी समाज और पाठकों को सचेत करना इन कविताओं का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इन ताकतों के स्वरूप की पहचान विभिन्न कवियों की कविताओं में अलग.अलग ढंग से अभिव्यक्त हुई है। इस शोधपत्र के अंतर्गत इसी दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है।

मूल शब्दः संवाद, अभिव्यक्ति, संकटपूर्ण परिवेश, तानाशाह, प्रेम, संवेदना

किसी भी समाज की स्पष्ट वैचारिकी और सभ्य नागरिकता को संवर्धित करने वाली शक्ति के रूप में 'संवाद' की महत्त्वपूर्ण परंपरा रही है। जिन सभ्यताओं में संवाद की स्वस्थ परंपरा निर्मित और विकसित हुई, वे सभ्यताएँ मानव.समाज में एक मानक स्थापित कर पाने में समर्थ हुईं। विभिन्न कलाएँ, साहित्यिक रचनाएँ और ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न अनुशासन मनुष्य की सभ्यता की श्रेष्ठता को व्यक्त करते हैं। संवेदनशील मनुष्य की कल्पनाओं की दुनिया कितनी सुंदर हो सकती है, किस तरह की हो और उसे मानवता की रक्षा के लिए किस प्रकार विकसित किया जाए, यह उसके श्रेष्ठ मंतव्यों का परिणाम होती है। एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन संवादों की प्रवृत्ति कितनी स्वतंत्र या दबावरहित है। नकारात्मक शक्तियों के दबाववश मनुष्य की हितैषी शक्तियाँ सक्रिय रूप से कार्यरत नहीं हो पातीं। यह विवशता मनुष्य समुदाय को अपने विकास के विभिन्न चरणों में झेलनी पड़ी है। इसे मंगलेश डबराल की इस कविता से समझा जा सकता हैए जिसमें उपरोक्त बातों की स्पष्टता आसानी से प्रकट होती हैं–

''एक नई रंगीन किताब है जो मेरी कविता के
विरोध में आई है
जिसमें छपे सुंदर चेहरों को कोई कष्ट नहीं
जगह–जगह नृत्य की मुद्राएँ हैं विचार के बदले
जनाब एक पूरी फिल्म है लम्बी
आप खरीद लें और भरपूर आनन्द उठाएँ''
'अभिनय'(मंगलेश डबराल)

सब कुछ वैसा ही चल रहा है जैसा पीछे घटित होता आया था। शोषक शोषण कर रहा था, शोषित चीख रहे थे, तटस्थ मौन था, हत्यारा हत्या की साजिशें रच रहा था और बाकी सारा समाज भयभीत था, परंतु समय की गति बढ़ चुकी थी। समय के साथ तालमेल बिठाने के लिए सभी तकनीकी अस्त्रों पर सवार हैं। जिसके भीतर जैसी ऊर्जा संचरित हो रही है, वह तकनीक का उसी अनुरूप इस्तेमाल किये जा रहा है। दुनिया में मानों हड़बड़ी सी मची हो। ऐसा प्रतीत हो रहा कि कहीं से जाति ने अपना दामन छुड़ा लिया हो, किसी तरफ से धर्म ने इंसानों के पंजे से खुद को छुड़ा लिया हो, स्त्री अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए भटक रही हो, दमित मानव समुदाय सम्मान पाने के लिए कर्मशील हो, किसी की कुलीनता खतरे में हो और वो उसे बचाने के लिए भव्य बंगलों में छिपा हो। ये सारे तत्व मानों धरती के गुरुत्व क्षेत्र को लाँघकर अंतरिक्ष की शून्य कक्षाओं में तैर रहे हों। जिनके आपस के सम्बंध एक–दूसरे के प्रतिकर्षण से परिचालित हो रहे हों और वे एक–दूसरे के स्पर्श से दूर तैर रहे हों।

राजनीति इस पूरे विघटन को ठीक उसी तरह देखती है, जैसे मुर्दे की खाल उतारे जाने के बाद बचे मांस पर झपट्टा लगाने वाले चील–कौए टकटकी लगाए रहते हैं। जिस राजनीतिक दल या व्यक्ति की जैसी जरूरत होती है, वह अंतरिक्ष में तैरती उन चीजों के पास हाथ बढ़ाते हैं लेकिन सभी को यही महसूस हो रहा कि चीजें फिसल रही है, उनकी पकड़ से बाहर जा रही है। इसलिए उन पर धावा बोला जा रहा है। सब कुछ इतनी नाटकीय तेजी से घटित हो रहा है कि सभी ने अपनी प्राकृतिक पहचान खो दी है। मासूम पात्र का अभिनय करने वाले को हत्यारे की वेशभूषा थमाकर, हत्यारा साफ–सुथरे मासूम कपड़े पहन कर हत्या करने निकला है। हत्यारा अपनी वेशभूषा व स्वरूप से हटकर सभ्य नागरिक के भेष में निकल पड़ा है। इस छीना–झपटी में सभी अपने निर्धारित संवाद भुला चुके हैं। जिन्हें सत्य का पक्षधर होने पर गर्व था वे खुशामदी की भाषा बोलने लगे, जिन्हें कवि होना था, वे चारण बनकर मसनदें संभाल रहे। इस अफरा–तफरी में कुछ लोग इन हलचलों से दूर होने की कोशिश कर रहे हैं और अपने संवादों, कर्तव्य और सिद्धांतों पर डटे हैं। ऐसे लोगों ने अपने विचार संप्रेषित करने की कोशिश में अपने कंठ उछाले परंतु शहंशाह हत्यारे ने प्रदर्शनए नग्नता के बाजार के बाजे की आवाज इतनी तेज कर दी कि विचारों की श्रृंखला शोर में डूब गई। अपने विचारों को शोर में डूबता देखकर चिंतकों, विचारकों की टोली ने अपनी–अपनी किताबें, पन्ने, कलम सब कुछ समेट कर बस्ते में रख लिया और उदास, अशांत और मौन होकर नया तरीका मिलने तक चल पड़े। उन्हें दुख था कि मानव का जीवन बाजारों में बिक्री के लिए खड़ा कर दिया गया है।

सारे प्राकृतिक संसाधन पैकिंग, डिब्बा बंद हो चुके हैं। बाहर उनकी उपलब्धता संदिग्ध हो चुकी है। राजनीतिक महापुरुषों ने अपने असफल एजेंडे का मुख छिपाने के लिए अलग–अलग मुद्दों पर जनता को दिग्भ्रमित करने के तरीके ईजाद किये हैं जिनका असर एक नियत काल–खंड (time unit) तक बना रहता है। जनता जैसे ही उस दिग्भ्रमित अवस्था से बाहर आने लगती है, वैसे ही पुनः उन्हें एक बेवजह की घटना की ओर मोड़ दिया जाता है। आजकल तो राजनेता मरे हुए लोगों की आत्मा की शांति पर देशव्यापी रंगारंग कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। जरूरत के मुताबिक उस मरे हुए व्यक्ति को अपने घर आमंत्रित

किया जा रहा, ताकि जनता को ये लगे कि वो महापुरुष मृत्यु के बाद भी इस जीवित नेता के घर आते–जाते रहते हैं। इससे वर्तमान नेता का कद और मंतव्य दोनों सिद्ध हो जाएंगे। हत्यारे व अत्याचारी की पहचान मंगलेश डबराल जी की एक कविता के माध्यम से देखने का प्रयास कीजिये –

''अत्याचारी के घर पुरानी तलवारें और बन्दूकें
सिर्फ़ सजावट के लिए रखी हुई हैं
उसका तहख़ाना एक प्यारी सी जगह है
जहाँ श्रेष्ठ कलाकृतियों के आसपास तैरते
उम्दा संगीत के बीच
जो सुरक्षा महसूस होती है वह बाहर कहीं नहीं है
अत्याचारी इन दिनों खूब लोकप्रिय है
कई मरे हुए लोग भी उसके घर आते जाते हैं''
'अत्याचारी के प्रमाण'/ मंगलेश डबराल (1992)

मंगलेश की एक और कविता में अत्याचारी के रूप में तानाशाह की प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है, जिसमें वह हिंसा, हत्या और अत्याचार के बाद दुनिया को यह संदेश देना चाहता है कि उसे जीवन के कोमल और संवेदनशील पक्ष बहुत अच्छे लगते हैं। उसकी यह प्रवृत्ति एक सफल 'ढोंग' कही जा सकती है, किंतु कवि उसे पहचानता है। वर्तमान परिदृश्य में इस प्रवृत्ति के राजनेताओं को देखा जा सकता है, जो जनता के पक्षधर होने का दावा तो जरूर करते हैं, किंतु वे जनता को विभिन्न मतवादों में उलझाकर उनकी आपसी एकता और सौहार्द्र को खत्म करने का प्रयोजन करते हैं। विभिन्न समुदायों को एक–दूसरे का द्वेषी सिद्ध करके उनके मध्य संवादों के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं। विभिन्न धार्मिक और जातीय नेताओं के द्वारा स्वस्थ संवादों को खत्म करके नफरती भाषणों (Hate speech) के माध्यम से सामाजिक संबंधों को तोड़ने का काम किया जाता है।
इसी क्रम में राजेश जोशी की कविताएँ भी इस सत्य को व्यंग्यात्मक लहजे में प्रकट करती हैं। 'मारे जाएँगे' कविता में राजेश जोशी की ने व्यंग्य की शैली का इस्तेमाल समय की भयावहता को देखते हुए किया है, क्योंकि हत्याओं को आसान क्रिया बनाने वाले समय में सीधी–सीधी बात कहना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए वे उन सभी को चेतावनी देते हैं, जो सत्य के पक्षधर हैं। इस कविता में व्यक्त व्यंग्य एक विशिष्ट सांकेतिकता के माध्यम से समय की क्रूरता से न्याय के पथ पर चलने वालों को बचने का संकेत करती है–

''कटघरे में खड़े कर दिए जाएंगे, जो विरोध में बोलेंगे
जो सच–सच बोलेंगे, मारे जाएंगे
बर्दाश्त नहीं किया जाएगा की किसी की कमीज़ हो
'उनकी' कमीज से जादा सफेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जाएंगे''

'उनकी' से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह किन समूहों के लिए कहा गया है। ये वही लोग हैंए जो स्वतंत्र संवादों और सत्य की पक्षधरता में संलग्न लोगों पर पहरेदारी करते है। यह अत्याचारी वर्ग संवादों पर पहरे डाल कर नागरिकों में 'बौद्धिककाहिली' पैदा करना चाहता है, जिससे वे सत्य के पक्ष में खड़े होने से भयभीत हो जाएं। इससे अत्याचारियों के उद्देश्यों की पूर्ति करना आसान हो जाता है। इस कविता के प्रत्यक्ष अर्थ पर जाएँ, तो यह बहुत भयावह परिस्थिति है कि सत्य बोलने वाले कटघरे में खड़े किए जाएँ और दागदार होकर जीना ही जीवन बचाने का सर्वोत्तम मार्ग बना दिया जाए। इन परिस्थितियों में लोकतांत्रिक परिवेश और मानव जीवनानुकूल परिवेश को बनाए रख पाना दुष्कर कार्य होता है।

हिंदी कविता में संवाद और सर्जन की प्रक्रियाओं को कई ढंग से प्रकट किया गया है। संवैधानिक प्रावधानों ने एक नागरिक के अधिकारों के अंतर्गत 'अभिव्यक्ति का अधिकार' बनाया और अनर्गल प्रलापों पर दंड का भी प्रावधान किया, किंतु तानाशाही व्यवस्थाओं के दौर में सार्थक मांगों और सौहार्द के संभाषणों को कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है। कवियों ने मानव–मानव के बीच के भाषिक संवादों से इतर प्रकृति की नैसर्गिक क्रियाओं में भी संवादों की अभिव्यक्ति की छटपटाहट को महसूस किया है और उन्हें सुंदर भविष्य की रचना का माध्यम माना है। एक बीज के फूटकर अंकुरित होने को कवि अभिव्यक्ति को 'सिरजने' (सर्जन करने) के रूप में देखता है –

''एक नए बीज में फूट रही हैं इच्छाएँ
जिसे आप दांतों के बीच दाबकर भी नहीं
तोड़ पाते थे
वह कोमलतम होकर सिरज रहा है
अभिव्यक्त होने के लिए''

प्रकृति में बीजों के फूटने और पल्लवित होने को उत्सव और उल्लास की अभिव्यक्ति माना जाता है। यह प्रकृति का संवाद है, जो मनुष्यों को प्रेरणा देता है। मनुष्य, मनुष्य के विकास का स्वागत नहीं कर पाता, क्योंकि द्वेष और घृणा उसका चरित्र बन चुका है। कविता इन्हीं स्थानों पर संवेदनशीलता को बनाए रखने का काम करती है, जिस प्रकार मिट्टी बीजों के अंकुरण को संभव बनाने के लिए अपने भी नमी और ऊष्मा दोनों बनाए रखती है। कथ्य यह है कि संवाद मानव संबंधों को कोमलतम बनाने का जतन करती है, किंतु विपरीत मौसमों की मार से जैसे अंकुरित बीजों के नवपल्लव मुरझाने लगते हैं, ठीक वैसे ही प्रेम आदि कोमलतम भावों की अभिव्यक्ति मानवीय सहृदयता का सुंदर संवाद हैए जिसे प्रेम–विरोधी शक्तियाँ नष्ट कर देना चाहती हैं। बद्रीनारायण की कविता 'प्रेमपत्र' प्रेमपूर्ण संवादों के शिलालेख समान प्रेमपत्रों पर मंडराने वाले संकट को अभिव्यक्ति के संकट की तरह देखते हैं –

''प्रेत आएगा
किताब से निकाल ले जाएगा प्रेमपत्र
गिद्ध उसे पहाड़ पर पर नोच.नोच खाएगा
चोर आएगा तो प्रेमपत्र चुराएगा
जुआरी प्रेमपत्र पर दांव लगाएगा
ऋषि आएंगे तो दान में मांगेंगे प्रेमपत्र।''

यह संकट गहरा है, जहाँ प्रेम और सद्भावनाओं की प्रकटीकरण की प्रक्रिया को कठिन बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है और घृणा को समयानुकूल सत्य घोषित किया जा रहा है। आज के दौर में सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक जीवन में भी अभिव्यक्ति पर इतने दबाव निर्मित किए जाते हैं, जिससे सत्य प्रकट न हो सके। कवि की पीड़ा इस परिवेश में बढ़ती जाती है, जिसका धर्म ही है बोलना और लिखना –

''तुम कहाँ कहने देते हो स्त्री को
जो लंबी–लंबी केशराशि लहराकर
तुझ गंजे की खातिर जोगड़ी हो गई
कहाँ कहने देते हो तुम
बच्चों को दिल की बातें
कि जिनके पास
दिल के अलावा और कुछ होता ही नहीं
तुम कहाँ कहने देने तो कवि को
कि जिसके पास कहने के अलावा
और कोई काम ही नहीं है''

कहने या अभिव्यक्ति के अवसर न मिलने की पीड़ा कविता में उभरकर यथार्थ के परिवेश को प्रकट करती है। भाषा में अभिव्यक्ति का स्पेस खोजती ये कविताएँ प्रतिरोध का स्वर बनती हैं। हिंदी कविता में भाषा की संभावनाओं को मजबूत करने की कोशिश प्रायः दिखाई पड़ती है। भाषा ही एक माध्यम है, जो संवादों को रचने का उद्योग आसान बनाती है। व्यवस्थाओं के क्रूर चरित्रों के प्रभावी होने के बावजूद कविता 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' को बनाए रखने का जतन पूरी संभावनाओं के साथ करती है।

संदर्भ सूची

1. मंगलेश डबरालए प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. 49
2. वही, पृ. सं. 65
3. राजेश जोशी, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, चौथा संस्करण : 2021, पृ. सं. 79.80
4. हरीशचंद्र पांडेय, मेरी चुनिंदा कविताएं, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण : 2016, पृ. सं. 116
5. बद्रीनारायण, प्रतिनिधि कविताए,ए राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2022, पृ. सं. 18
6. रमाशंकर यादव 'विद्रोही', नई खेती, नवारुण प्रकाशन, गाजियाबाद, दूसरा संस्करण : 2018, पृ. सं. 74